UGC Approved Journal No. 1529 Impact Factor : 2.591 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Refereed Research Journal

Vol. 8, No. 4 Year - 8 April-June, 2017

PART-I

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh
Faculty of Management Studies
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Associate Professor of Commerce
and Vice Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
Varanasi

Scanned by CamScanner

☛	इलाहाबाद में पायी जाने वाली मिट्टियाँ : एक भौगोलिक विश्लेषण **प्रदीप कुमार उपाध्याय**	87-90
☛	तन्त्रशास्त्र में योग द्वारा कुण्डलिनी जागरण **डॉ0 रमेश चन्द एवं डॉ0 ज्योति सिंह**	91-94
☛	خواجہ میر درد **ارشد جمال**	95-98
☛	विज्ञापन और जनसूचना में सम्बन्ध और विभेद **संतोष कुमार यादव**	99-102
☛	डिजिटल इण्डिया और ग्रामीण परिवर्तन (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण) **राजेश कुमार यादव**	103-108
☛	गाँधी और मार्क्स **डॉ0 सुषमा मिश्रा**	109-112
☛	सहकारिता के सिद्धान्त : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण **डॉ0 हरि शंकर यादव**	113-116
☛	वैदिककालीन शिक्षा का आदर्श **मनोज कुमार**	117-120
☛	अथर्ववेद में पशुपालन–विज्ञान **रमाशंकर प्रसाद**	121-122
☛	जीवन मूल्यों के विकास में शिक्षा **अमित कुमार एवं आकांक्षा तिवारी**	123-124
☛	एक आधुनिक शिक्षाविद् डॉ0 अम्बेडकर **रितेश सिंह तोमर**	125-128
☛	वैयाकरणभूषणसारग्रन्थालोके धात्वर्थविचारः **मनीष कुमार मिश्र**	129-130
☛	पारिस्थितिकी दर्शन : पर्यावरणीय ह्रास के संदर्भ में **डॉ0 अमित यादव**	131-134
☛	अंधायुग **आशा सिंह यादव**	135-138
☛	लोकगीतों में जनश्रुतियों का प्रतिपादन **डॉ0 प्रतिभा राय**	139-142
☛	नैषधीयचरित में प्रभात सौन्दर्य वर्णन **अजय कुमार**	143-148
☛	भारत में बुजुर्गों (वरिष्ठ नागरिकों) की स्थिति : कारण एवं समाधान **डॉ0 मधु सिसोदिया**	149-154
☛	वर्तमान संस्थागत शिक्षण प्रणाली के सन्दर्भ में गुरु–शिष्य परम्परा की प्रासंगिकता **डॉ0 संतोष कुमार**	155-158
☛	शृंगार रस की सर्वश्रेष्ठता **स्वाति त्रिपाठी**	159-160

Scanned by CamScanner

पारिस्थितिकी दर्शन : पर्यावरणीय ह्रास के संदर्भ में

डॉ0 अमित यादव*

दर्शन ने क्षेत्र में 'पारिस्थितिकी विमर्श' मानव की पर्यावरण के प्रति सजगता, उसकी महती उपादेयता की स्वीकार्यता का प्रमाण है। पारिस्थितिकी दर्शन, दर्शन के क्षेत्र में एक नवीन विकास है जो यह प्रकट करता है कि मनुष्य का चिंतन वाह्य दशाओं को प्रभावित करता है और उनसे प्रभावित भी होता है। पारिस्थितिकी दर्शन का अध्ययन नीतिशास्त्र की शाखा अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र के अंतर्गत किया जाता है। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र जैसा कि शब्दशः स्पष्ट है कि यह मानव जीवन तात्कालिक महत्व की नैतिक समस्याओं को अपना केन्द्र बिंदु बनाती है। पारिस्थितिकी–दर्शन समस्त जैविक–अजैविक घटकों का मनुष्य के साथ सम्बन्धों का अध्ययन करता है। यह मनुष्य और अन्य पर्यावरणीय घटकों के मध्य संतुलन को बनाए रखने का दार्शनिक–वैचारिक प्रयास है। यह मनुष्य और प्रकृति के मध्य अन्तः सम्बन्धों का रचनात्मक, मूल्यात्मक, समन्वयात्मक अध्ययन करता है।

औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, भारी मशीनीकरण आदि ने व्यापक स्तर पर प्राकृतिक संसाधनों के अतिशय दोहन को बढ़ावा दिया। इस अतिशय दोहन ने मनुष्य और पर्यावरण के मध्य सम्बन्धों को असंतुलित बना दिया। पर्यावरणीय ह्रास से जुड़ी समस्याएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगत होने लगी। जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण, ध्वनि–प्रदूषण, ई–कचरा के साथ–साथ अंतरिक्ष में उपग्रहों को भेजने की वैश्विक होड़ ने अंतरिक्ष को भी प्रदूषित किया। प्रौद्योगिकीय नवोन्मेषों के द्वारा मानव जीवन की आवश्यकताओं की सरलता–सहजता से पूर्ति के प्रयासों ने मानव जीवन और उसके अस्तित्व पर ही संकट खड़ा कर दिया। विद्युत की निरंतर आपूर्ति के लिए बनाए गये ताप विद्युत संयत्रों ने जहाँ मानव स्वास्थ्य को विपरीत रूप से प्रभावित कर आनुवंशिक रोगों की चपेट में लिया वहीं जल विद्युत उत्पादन ने भूकंप एवं व्यापक स्तर पर बाढ़ की शंकाएं बढ़ा दी। जल विद्युत उत्पादन के लिए बनाए गये बड़े बाँधों के कारण एक विशाल क्षेत्र की पारिस्थितिकी सम्पन्नता का बड़े स्तर पर ह्रास होता है जिससे पारिस्थितिकी तंत्र कमजोर होता है और पर्यावरणीय समस्याओं का जन्म होता है।

तेजी से बढ़ी शहरीकरण की प्रवृत्ति ने जनसंख्या का दबाव शहरों पर बढ़ा दिया है। पहले से ही आधारभूत संरचनाओं की कमी से जूझते शहरों में बेतरतीब बढ़ती बस्तियाँ जहाँ प्राकृतिक जलाशयों को लीलती जा रही है वहीं बस्तियों से निकलने वाला कूड़ा–कचरा व्यवस्थित निपटान के अभाव में वायु–प्रदूषण के साथ–साथ जल प्रदूषण की भी समस्या खड़ी कर रहा है। प्राकृतिक जलाशय और नम भूमियाँ जो पृथ्वी के श्वसन तंत्र की भाँति कार्य करते हैं, को पाटकर भवनों का निर्माण किया जा रहा है, जिससे प्राकृतिक असंतुलन के साथ–साथ स्थान–विशेष की जैव–विविधता भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो रही है।

आधुनिक कल कारखानों, मोटर वाहनों, वायुयानों एवं ध्वनि प्रसारक यंत्रों के कारण ध्वनि प्रदूषण भी मानव जीवन और उसके स्वास्थ्य को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रहा है। ध्वनि प्रदूषण के कारण मानसिक तनाव, अनिद्रा, उच्च रक्त चाप जैसी अनेक समस्याएं जन्म ले रही हैं।

भूमण्डलीय उष्मीकरण वर्तमान समय में एक वैश्विक पर्यावरणीय समस्या के रूप में उभरा है। यह वस्तुतः सौर–ऊर्जा–चक्र में होने वाले व्यवधान को इंगित करता है। ग्रीन हाउस गैसों के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, जिससे ग्लेशियरों के पिघलने का खतरा उत्पन्न हो गया है। वृहद् स्तर पर ग्लेशियरों के पिघलने पर छोटे व निम्न स्थानों पर स्थित द्विपीय देशों के विलुप्त हो जाने की समस्या उठ खड़ी हुई है। इसके साथ ही व्यापक स्तर पर जैव–विविधता के ह्रास की संभावनाएं भी जताई जा रही हैं। 'आई0

* असिस्टेण्ट प्रोफेसर (दर्शनशास्त्र), राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

Scanned by CamScanner